'वाह वाह वर्ष'

मुरली के प्रति प्रीत सप्ताह

02.02.1014

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान गोपीवल्लभ की सच्ची गोपी हूँ।

- शास्त्रों में प्रसिद्ध है कि मुरली की तान सुनकर गोप-गोपिकाएँ अपनी सुध-बुध भूल जाया करते थे...और अपने सब काम छोड़कर मुरलीधर की मुरली सुनने पहुँच जाया करते थे...वे मुरली की धुन में अपने देह का भान भूलकर अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगते थे...रास करने लगते थे...शास्त्रों में वर्णित वे गोप-गोपिकाएँ और कोई नहीं, बल्कि हम ही हैं...।

2. **योगाभ्यास** –

अ. भक्ति में वे भक्त बड़े महान् माने जाते हैं, जिनके कानों में सदा `अनहदनाद` गूँजता रहता है...हमारे कानों में भी मुरलीधर के मधुर मुरली की धुन गूँजती रहे...अर्थात् परमात्म महावाक्य का सिमरण करते हुए हम गोप-गोपियाँ सारे दिन अतिन्द्रिय आनंद में झूमते रहें...।

ब. मैं गॉडली स्टूडेन्ट हूँ...स्वयं भगवान मुझे पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं...मैं कितना ना भाग्यशाली हूँ जिसका शिक्षक स्वयं भगवान है...वाह रे मैं वाह मेरा भाग्य...इसी नशे में मुरली सुनें और सारे दिन इस नशे को कायम रखें।

स. मुरली से पूर्व बड़े प्रेम से मुरलीधर बाबा का आह्वान करें...उनको ही सामने देखते हुए मुरली सुनें...और मुरली के पश्चात् उनका तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करते हुए विदाई दें...।

3. **धारणा – रोज मुरली सुनना वा पढ़ना**

- ``जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथाशक्ति बनेंगे। इसलिए **मुरली, मुरली, मुरली**। क्योंकि मुरली में रोज के डायरेक्शन होते हैं, चारों ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं, तो रोज के डायरेक्शन लेने हैं ना ? तो जो भी मिस करता हो, कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली सुनें।`` **– मुरलीधर**

4. **चिंतन** –

- मुरली की महत्ता/मुरली सुनने के 108 फायदे लिखें।
- मुरली को खुद के लिए सरस/मनोरंजक कैसे बनायें ? मुरली का पूरा-पूरा लाभ कैसे उठायें ?
- सेवाकेन्द्र में मुरली सुनने और व्यक्तिगत रुप से मुरली पढ़ने में क्या अंतर है ? उत्तम क्या है ?
- रोज की मुरली से होमवर्क कैसे निकालें और उसे प्रैक्टिकल में कैसे लायें ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों !प्यारे बाबा ने कहा है - ``अगर रोज की मुरली जो बाप ने कहा और बच्चों ने किया तो उसको कहा जाता है बाप के सिकीलधे बच्चे, आज्ञाकारी बच्चे। रोज की मुरली उसमें चारों ही सब्जेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है, वाणी का भी है, कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।`` तो आयें अब ब्रह्मा बाबा समान मुरली को महत्व देते हुए मुरलीधर की सभी शिक्षाओं को अपने जीवन में लायें।